दृष्टि The Vision

हिन्दी साहित्य

(Hindi Literature)

टेस्ट-5

(प्रश्न पत्र-I)

DTVF / OPT-23 **HL-2305**

निर्धारित समय: तीन घंटे Time Allowed: Three Hours	अधिकतम अंक : 250 Maximum Marks : 250

नाम (Name): Karmveer

क्या आप इस बार मुख्य परीक्षा दे रहे हैं? हाँ ✓ नहीं

मोबाइल नं. (Mobile No.):

ई-मेल पता (E-mail address):

टेस्ट नं. एवं दिनांक (Test No. & Date): 20 July 2023.

रोल नं. [यू.पी.एस.सी. (प्रा.) परीक्षा-2023] [Roll No. UPSC (Pre) Exam-2023]:

0	8	5	2	6	7	2

Question Paper Specific Instructions

Please read each of the following instruction carefully before attempting questions:

*There are **EIGHT** questions divided in **TWO SECTIONS.***

*Candidate has to attempt **FIVE** questions in all.*

*Questions no. 1 and 5 are compulsory and out of the remaining, any **THREE** are to be attempted choosing at least **ONE** question from each section.*

The number of marks carried by a question/part is indicated against it.

*Answer must be written in **HINDI** (Devanagari Script).*

Answers must be written in the medium authorized in the Admission Certificate which must be stated clearly

Word limit in questions, wherever specified, should be adhered to.

Attempts of questions shall be counted in sequential order. Unless struck off, attempt of a question shall be counted even if attempted partly. Any page or portion of the page left blank in the Question-cum-Answer Booklet must be clearly struck off.

कुल प्राप्तांक (Total Marks Obtained): ______ टिप्पणी (Remarks): ______

मूल्यांकनकर्त्ता (कोड तथा हस्ताक्षर)
Evaluator (Code & Signatures)

पुनरीक्षणकर्त्ता (कोड तथा हस्ताक्षर)
Reviewer (Code & Signatures)

Feedback

1. Context Proficiency (संदर्भ दक्षता)
2. Introduction Proficiency (परिचय दक्षता)
3. Content Proficiency (विषय-वस्तु दक्षता)
4. Language/Flow (भाषा/प्रवाह)
5. Conclusion Proficiency (निष्कर्ष दक्षता)
6. Presentation Proficiency (प्रस्तुति दक्षता)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

खण्ड - क

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

1. निम्नलिखित पर लगभग 150 शब्दों में टिप्पणी लिखिये: $10 \times 5 = 50$

(क) हिन्दी भाषा का क्षेत्र

वैसे तो भाषा का कोई क्षेत्र निर्धारित नहीं होता, वह तो हर जगह उपलब्ध है। लेकिन फिर भी अध्ययन के सरलीकरण के लिए हिन्दी भाषा के क्षेत्र को देखा जाता है। जिसमें उत्तरी, उत्तरीपूर्व में (उत्तरपूर्व राज्यों को छोड़कर), उत्तरी-पश्चिमी, मध्य भारत को लिया जाता है।

हिन्दी भाषा क्षेत्र में उत्तराखण्ड, हिमाचल, पंजाब, हरियाणा, उत्तरप्रदेश, राजस्थान, और मध्यप्रदेश को शामिल किया जाता है।

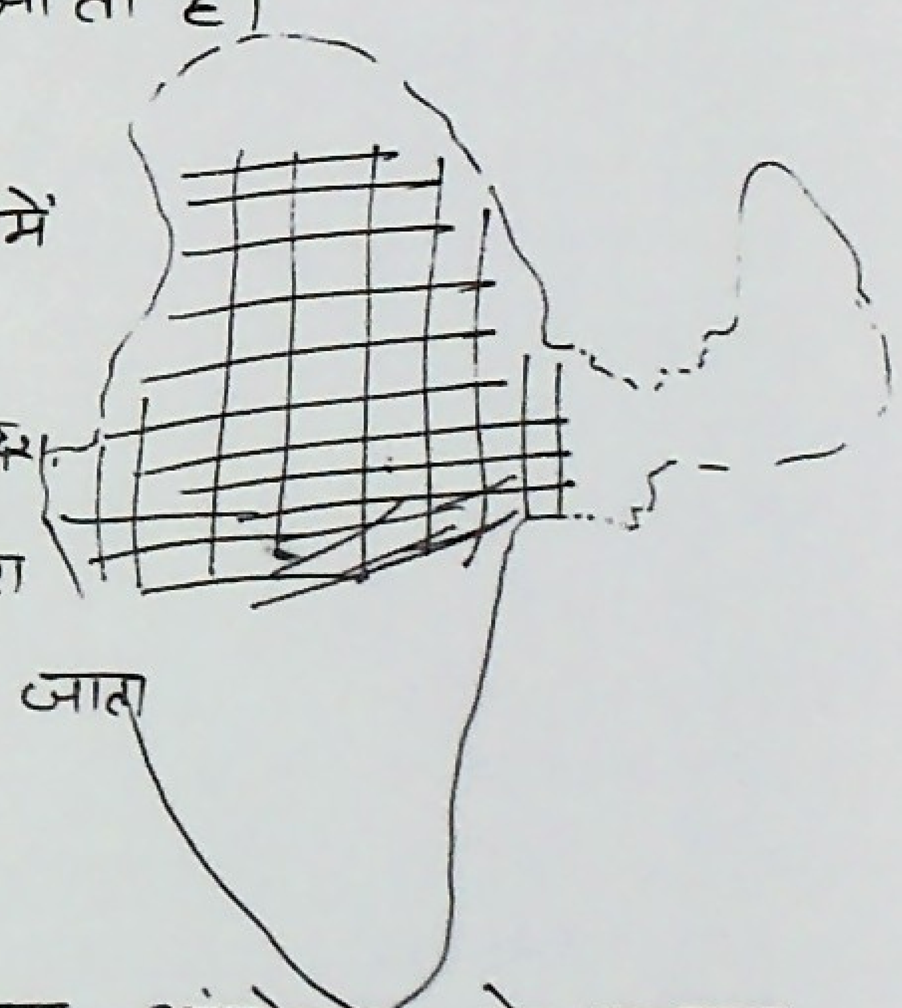

हालांकि स्वतंत्रता आंदोलन के समय हिन्दी भाषा की महत्ता की स्थापना सम्पूर्ण भारत में हुई। इसे गाँधीजी के प्रयास से दक्षिणी भारत तथा उत्तर-पूर्व मे भी फैलाया गया।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

हिन्दी भाषा के क्षेत्र को रामविलास शर्मा ने 'हिन्दी जातीयता ~~से~~ ~~हिन्दी~~' से भी संबोधित किया है। जिनका सम्पूर्ण कार्य अध्ययन-पान से लेकर नौकरी पेशा तक हिन्दी पर बल दिया जाता है।

अतः हम कह सकते है कि हिन्दी भाषा के विकास को आगें ले जाने के लिए त्रिभाषा सूत्र, राजभाषा इत्यादि के लिए राजनीतिक मनोवृत्ति की आवश्यकता हैं।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) देवनागरी लिपि के सुधार के प्रयासों में 'काशी नागरी प्रचारिणी सभा' का योगदान

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

4. (क) भारत की भाषा-समस्या के संदर्भ में 'त्रिभाषा सूत्र' की अवधारणा पर प्रकाश डालिए। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

बहुभाषिक देश में कोई भी एक भाषा को अन्य भाषाओं की तुलना में महत्ता नहीं प्रदान की जाती है, तो क्या राष्ट्रीय महत्व की कोई भाषा निर्धारित होनी चाहिए या नहीं।

आजादी के बाद उपरोक्त समस्या भारतीय नेताओं के सामने आई कि कौनसी भाषा पर ज्यादा बल दिया जाना चाहिए, तब नेताओं / जनता के प्रयासों से त्रिभाषा सूत्र की स्थापना ~~स~~ हुई।

त्रिभाषा सूत्र का अर्थ है, कोई भी व्यक्ति को तीन भाषाओं का ज्ञान होना चाहिए। एक तो स्वयं मातृभाषा, दूसरी अंग्रेजी, तीसरी कोई भाषा। जैसे उत्तर भारत का निवासी दक्षिण भारत की भाषा जैसे- तमिल, तेलगू, कन्नड इत्यादि में कोई सीख लें।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

त्रिभाषा सूत्र से विद्यार्थियों को मातृभाषा, अन्य भाषा तथा अंग्रेजी शिक्षा के ज्ञान से विदेशों में शिक्षा का महत्व तथा परम्पराओं के ज्ञान मे मदद मिलेगी। इसके प्रयास मे सरकार ने नवोदय विद्यालय मे लागू भी किया है।

त्रिभाषा सूत्र से एकीकरण की भावना को बल मिलेगा, जहाँ दोनों संस्कृतियों मे परस्पर मिठास से नवजागरण की ओर कदम होगा। ऐसा प्रयास हिन्दी साहित्य में सूफी काव्य मे किया है। इन्होंने अवधी की मिठास तथा फारसी परम्परा को संयुक्त करके एक सांस्कृतिक उत्थान को सफल किया।

तो आज त्रिभाषा सूत्र की स्थिति पर विचार करें तो पाते है जिस हिन्दी ने दो-दो पुनर्जागरण की मध्यस्थता की, राष्ट्रीय आंदोलन मे गठजोड़ का कार्य किया,

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

उसे आज राजनीतिक मनोवृत्तियों के कारण समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है। जैसे- तमिलनाडु का हिन्दी के प्रति विरोध, बैंगलोर मे हिन्दी भाषा को लेकर ऑटो किराया को लेकर हालिया विवाद।

त्रिभाषा सूत्र की स्थापना की सिफारिशें 2020 में के. कस्तुरंगन समीति ने भी दिया, जिन्होंने नई शिक्षा नीति को लागू करने मे इस सूत्र का महत्व बताया।

विचार करें तो हम पाते हैं कि त्रिभाषा सूत्र के लागू होने से लोगों के मध्य सांस्कृतिक आवाजाही बढ़ेगी। लोगो के मध्य बंध बढ़ने से सामाजिक-आर्थिक लाभ को सफलता मिलेगी।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

जरूरत है आज राजनीतिक मनोवृत्तियों की कुशलता की। जिससे परस्पर सद्भाव द्वारा त्रिभाषा सूत्र को लागू किया जाए। साथ ही इसे लोगों के मध्य एक अतिवार्य विषय बनाया जाए।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) 'अपभ्रंश' की शब्दकोशीय प्रवृत्तियों पर प्रकाश डालिये। 15

अपभ्रंश हिन्दी भाषा के विकास की यात्रा में तृतीय स्थान पर आती है। पालि, प्राकृत के बाद अपभ्रंश का स्थान आता है। विकास क्रम में निरन्तर परिवर्तन होते हुए अपभ्रंश में अनेक व्याकरणिक, शब्दकोशीय, ध्वयनिक शब्दों में परिवर्तन हुआ।

अपभ्रंश : शब्दकोशीय प्रवृत्ति

→ इस काल में तद्भव शब्दों की भरमार रही। संस्कृत के विकास के क्रम में तत्सम से तद्भव में परिवर्तन स्वभाविक था।

जैसे- काम > कम्म धरम > धम्म
किरिया इत्यादि।

साथ ही देशज शब्द व विदेशी शब्दों की आवृत्ति बढ़ने लगी थी।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ii) अपभ्रंश जब घर- घर मे स्थापित होने लगी, वो देशज शब्द कुछ परिवर्तन के साथ इसमें शामिल होने लगें। यह परिवर्तन शाब्दिक कोश भण्डार में वृद्धि करता है।

जैसे- रस्सी, लकड़ी इत्यादि।

(iii) अपभ्रंश के विकास क्रम में प्रारम्भ में तत्सम शब्द शब्द कम थे लेकिन समय के ~~साथ~~ साथ इनकी भी आवृत्ति बढ़ी। जिसके दो कारण थे।
प्रथम ब्राह्मण धर्म का पुनरुत्थान। जिसमे तत्सम शब्दों का प्रयोग किया। द्वितीय कुछ शब्द तद्भव होते- होते इतना मुश्किल हो गए थे कि दो अलग- अलग अर्थ वाले शब्द एक जैसे हो गए।

जैसे- सुप्त >> सुत (भावना & बेटे के लिए)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(iv) इसके साथ ही विदेशी संस्कृति का प्रभाव भी एक कारण था। जिससे अनेक फारसी तथा उर्दू शब्दों का इसमें समावेशन हुआ। जिसका प्रयोग ग्रियर्सन जैसे कवियों ने उदाहरण देकर समझाया है।

अतः उचित नहीं होगा कि एक भाषा के विकास मे अन्य का प्रभाव पड़ना स्वभाविक है। इसी अर्थ में शब्दकोशीय प्रवृत्ति का अध्ययन किया जाना चाहिए।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) हिन्दी की लिंग-व्यवस्था का स्वरूप स्पष्ट कीजिए। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

जहाँ संस्कृत भाषा में तीन लिंग मिलते हैं, वे हिन्दी भाषा के विकास क्रम मे आते-आते दो ही रह गए हैं। वहीं समकालीन अंग्रेजी में तो उभयलिंग के साथ चौथा लिंग भी पाया जाता है। जैसे- राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री, नेता।

हिन्दी	संस्कृत
(i) पुल्लिंग	(i) पुल्लिंग
(ii) स्त्रीलिंग	(ii) स्त्रीलिंग
	(iii) नपुंसकलिंग

संस्कृत भाषा का नपुंसकलिंग हिन्दी भाषा के सामान्तया: पुल्लिंग में समा गए।

लिंग पहचान के नियम

सामान्तया: शब्दों के अन्त में आने वाले प्रत्ययों के आधार पर लिंग की पहचान की जाती है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

पुल्लिंग	स्त्रीलिंग
मोर - 'अ'	मोरनी - 'ई'
कुत्ता - 'आ'	~~कुतिया~~ कुतिया - 'इया'
ठाकुर - 'अ'	ठकुराइन - 'आइन'
जेठ/देवर - 'अ'	जेठानी/देवरानी - आनी/आणी

हिन्दी में क्रियाएँ लिंग के अनुसार परिवर्तनशील हैं।

हिन्दी → वह जाता है। | वह जाती है।
संस्कृत → सः गच्छति | सा गच्छति:
English → He goes / She goes.

विशेषण- विशेष्य का प्रयोग भी परिवर्तन हिन्दी में होता है।

काला लड़का | काली लड़की

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

लिंग व्यवस्था परिवर्तन के साथ कुछ सीमाएँ भी सामनें आई हैं-

→ कई विदेशी शब्दों कें संयोजन से समस्याएँ सामने आई है।

उदाहरण → 'गरीबेनवाज' का लिंग निर्धारण कठिन हैं।

→ आधुनिक नारी चिन्तन ~~से~~ भी इनकें खिलाफ आवाज उठाई हैं।

जैसे- राष्ट्रपति ही क्यों राष्ट्रमहिला क्यों नहीं

अतः लिंग व्यवस्था के कारण हिन्दी पठनीयता में वृद्धि हुई हैं। ज्ञान में वृद्धि से लोगों कों समझनें में आसानी होती हैं।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

खण्ड - ख

5. निम्नलिखित पर लगभग 150 शब्दों में टिप्पणी लिखिये: 10 × 5 = 50

(क) साहित्यिक अवधी की सीमाएँ

मुल्ला दाऊद की चंदायन से सूफी काव्य मे अवधी की बेमेल मिठास तथा खूशबू का अनुभव होता है, साथ ही तुलसीदास ने भी अवधी का प्रयोग किया है। इसकी प्रशंसा तो स्वयं शुक्ल जी ने की हैं।

फिर भी साहित्यिक अवधी की कुछ सीमाएँ है-

- अवधी मे औदात्य, गंभीरता तथा मर्यादा का उत्स होने के कारण यह श्रृंगार, चांचलिकता कों सुशोभित नही कर पाई जो ब्रज ने किया।

- अवधी आधुनिक मनोविज्ञान, ज्ञान-विज्ञान का महत्व स्थापित करने में असफल रही, यही कारण है कि आधुनिक काल में खड़ी बोली की स्थापना हुई

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

अवधी प्रबन्ध काव्यों के लिए उपयुक्त थी, लेकिन मुक्तकों के लिए नहीं. स्वयं तुलसी ने मुक्तकों के लिए ब्रज भाषा का प्रयोग किया है। वही बिहारी जैसे गागर मे सागर भरने वाले, भाषा की समाहार क्षमता वाले कवि रीतिकाल मे ब्रज को महत्ता प्रदान करते है।

अवधी में भाषा का लचीलापन तो था, पर इतना नही कि यह अन्य हिंदी भाषी क्षेत्रों मे जाकर आधिपत्य जमा सके। यह कार्य भी ब्रजभाषा ने सफलतापूर्वक किया।

हालांकि यह कहना उचित होगा जो अवधी की मिठास सूफी काव्यों में मिलती है वैसी किसी काव्य में नहीं।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) राजभाषा हिंदी और देवनागरी अंक

राजभाषा वह होती है जिसका प्रयोग शासकीय / प्रशासनिक कार्यों के लिए किया जाता है। हिन्दी को कई राज्यों में राज्यभाषा का दर्जा दिया गया है- जैसे- उत्तरप्रदेश, राजस्थान में।

राजभाषा, राष्ट्रभाषा से अलग अवधारणा है। राष्ट्रभाषा का अर्थ है- सम्पूर्णता को जोड़े रखने के लिए कोई भाषा। वहीं राजभाषा के निहितार्थ अलग है।

जिस प्रकार अपभ्रंश से हिन्दी भाषा के अंकों की शब्दावृत्ति शुरू हुई, उसी प्रकार अंकों पर खोज-बीन किया गया। और देवनागरी अंक की स्थापना की गई।

आज हिन्दी साहित्य के अन्तर्गत राजभाषा हिन्दी तथा देवनागरी लिपि के लिए अलग-अलग मंचों से बल दिया जा रहा है। जैसे- हिन्दी साहित्य सम्मेलन।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

राजभाषा की स्थापना होने से अधिकारियों को सीखने की मनोवृत्ति में वृद्धि होती है, प्रशिक्षण स्तर में वृद्धि की जाती है। अतः इसके प्रयास को तेज करने की जरूरत है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) 19वीं शताब्दी में 'खड़ी बोली' के विकास में प्रेस की भूमिका

प्रेस की स्थापना तो 16वी शताब्दी में पुर्तगालियो ने कर दी. लेकिन इसका विकास हिन्दी भाषा के लिए तब हुआ जब ईसाई मिशनरियों ने प्रकाशन कार्य प्रारम्भ किया।

प्रकाशन में नागरी लिपि के टंकन का अविष्कार हुआ। अतः इन्ही प्रयासों से कोलकाता में 'उदन्त मार्तण्ड' पत्र का प्रकाशन होना प्रारम्भ हुआ। वही आगरा से सदासुखलाल ने 1856 में 'बुद्धिप्रकाश' नाम से पत्रिका प्रकाशित किया।

खड़ी बोली की स्थापना के क्रम मे 1850 के बाद मे अभूतपूर्व विकास हुआ जिसमें भारतेन्दु ने 'कविवचन सुधा' का प्रकाशन किया, वही

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

प्रतापनारायण मिश्र ने ब्राह्मण पत्रिका तथा बालकृष्ण भट्ट ने 'हिन्दी प्रदीप' की रचना की। जिसमें सच्ची समालोचना, लेखों इत्यादि का प्रकाशन किया।

यह वह समय था जब ब्रज भाषा का महत्व कम हो रहा था और आधुनिकता का महत्व बढ़ रहा था। उस समय उपरोक्त प्रयासों से खड़ी बोली के विकास का मार्ग प्रशस्त हुआ।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) 'खड़ी बोली आन्दोलन' में अयोध्या प्रसाद खत्री की भूमिका।

भारतेन्दु ने अपने युग मे गद्य के लिए खड़ी बोली की प्रमाणिकता को सिद्ध किया तो पद्य के लिए अभी भी ब्रज भाषा की प्रभावकारिता सिद्ध की।

तब महावीर प्रसाद द्विवेदी ने 'सरस्वती' पत्रिका के विषयों में खड़ी बोली की मधुरता, कान्तता को स्थापित करने का प्रयास किया। उस काल में अयोध्या प्रसाद खत्री की भूमिका महत्वपूर्ण है।

खत्री ने प्रियप्रवास की रचना ~~लिखि~~ कार्य किया। जिसकी भूमिका में लिखा -

"हिन्दी साहित्य की इस रचना मे अगर कान्तता तथा मधुरता नहीं आई है, तो वह मेरी प्रतिभा का दोष है, हिन्दी भाषा का नहीं'

इन्हीं के प्रयासों के चलते हिन्दी

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

में द्विवेदी युग के अन्त तक भाषायी द्वैत समाप्ति के कगार पर पहुँच गया था।

इसी के साथ खड़ी का 'प्रियप्रवास' भी खड़ी बोली के आधुनिक साहित्य में महत्वपूर्ण स्थान रखता है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ङ) राजभाषा अधिनियम, 1963

स्वतंत्रता आंदोलन का नेतृत्व हिन्दी भाषा ने किया था, लेकिन आजादी के बाद क्षेत्रीय माँगों के चलते हिन्दी भाषा की माँग घेरे में समा गई। तब यह निर्धारित किया गया कि 15 वर्ष बाद निर्धारित किया जाएगा कि भाषायी समस्या का हल क्या होगा? तब राजभाषा अधिनियम 1963 का आगमन होता है।

1. हिन्दी भाषा के लिए लिपि देवनागरी होगी।
2. संघ के अधिकारिक उद्देश्यों के लिए ~~हिन्दी~~ अंग्रेजी का उपयोग जारी रहेगा।
   - संसद के कामकाज के लिए।
   - न्यायालय में।

→ जरूरत हो तब अंग्रेजी के साथ-साथ हिन्दी का प्रयोग किया जा सकता है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

4. राजभाषा समीति की स्थापना की गई है।

5. केन्द्रीय अधिनियमों का हिन्दी अनुवाद किया जाना चाहिए।

6. कुछ मामलों के लिए राज्य का हिन्दी का प्रयोग

7. न्यायालयों में हिन्दी का वैकल्पिक प्रयोग

8. नियम बनाने की शक्ति → राज्य सरकार

9. ~~कुछ~~ प्रावधान जम्मू व कश्मीर के लिए लागू नहीं होंगे।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

6. (क) देवनागरी लिपि के मानकीकरण के विभिन्न प्रयासों पर प्रकाश डालिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

8. (क) मानक हिंदी की कारक-व्यवस्था पर प्रकाश डालिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

कारक व्यवस्था के अन्तर्गत संज्ञा पद या सर्वनाम पद कोई स्थान ग्रहण करता है जिसे उदाहरण से समझते हैं-

राम ने रावण को मारा।

राम- कर्ता

रावण - कर्म

ने, को - कारक

संस्कृत साहित्य में विभक्तियों का प्रयोग होता था (सः गच्छति) लेकिन भाषिक विकास के क्रम में विभक्तियों का स्थान परसर्गों ने लेना आरम्भ कर दिया। ये परसर्ग ही विकसित रूप मे कारक व्यवस्था में शामिल होते हैं।

कारक

कर्ता - ने

कर्म - को

करण - से

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

सम्प्रदान - को, के लिए

अपादान - से

संबंध - का, की, के, रा, रे, री

अधिकरण - में, पें, पर

संबोधन - हे

कुछ उदाहरण

→ हे (संबोधन) राम! अपनी कुल्हाड़ी से (अपादान) इस वृक्ष को (कर्म) काटो।

→ आज इतिहास के (संप्रदान) अध्यापक ने सम्पूर्ण फारसी साहित्य को पढ़ाया।

→ हिन्दी में कारक व्यवस्था का क्रम एक निश्चित पदानुक्रम मे आता है।

संबोधन > कर्ता > अधिकरण > संबंध > अपादान > संप्रदान > कर्म

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

→ वहीं यदि परसर्ग संज्ञा शब्द के साथ आए तो वह संज्ञा पद से अलग आता है।

राम ने वह कार्य किया।

→ यदि विशेषण के साथ आए तो साथ में प्रयुक्त होता है।

'उसने' रावण को मारा।

→ कारक व्यवस्था में शब्द विकारी शब्दों के साथ परिवर्तित भी होते हैं।

अतः हम कह सकते हैं विकास की प्रक्रिया में कारक व्यवस्था के सरलीकरण से हिन्दी के पठन-पाठन को अद्भुत गति मिली।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) मध्यकाल में साहित्यिक भाषा के रूप में अवधी के विकास में सूफी काव्यधारा के योगदानपर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

मध्यकालीन साहित्य में अवधी पर तुलसीदास ने 'कवितावली' में तथा सूफी काव्य में सूफी कवियों ने प्रयोग किया।

सूफियों में 'चंदायन' की रचना मुल्ला दाऊद ने शुरू किया। जिसमें ~~[illegible]~~ प्रेम पक्ष की अभिव्यक्ति हुई है।

दाऊद कवि ये चंदा गाई
सुनि सो जे मुरजाई।

उसके अगले क्रम में तो जायसी जैसे कवियों ने अवधी का 'पद्मावत' में बखूबी प्रयोग किया।

"यह तन जारौं छार के, कहौं कि पवन उड़ाव
मकु तेहि मारग उड़ि परै, केत धरै जहँ पाँव।

दूसरी प्रशंसा स्वयं शुक्ल जी ने की है-

"जायसी की भाषा का माधुर्य गुण

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

निराला है, वह गुण भाषा का नही. -- अवधी की बेमेल मिठास लिए हुए है।"

इसी के साथ अनेक प्रेम काव्यों में इसकी स्थापना हुई।

प्रेम पहार कठिन विधि गढ़ा।
सो पै चढ़ा सीस सौं चढ़ा।

इसके अलावा तुलसीदास ने भी कवितावली के उत्तरकाण्ड में ~~हिन्दी~~ अवधी का प्रयोग किया है।

उन्होंनें आर्थिक समस्याओं के बारे में लिखा है-

खेती न किसान को,
बनिया को न बानरी
× × × ×
जीविकाविहीन सीधमान सोच बस
कहाँ जाई का करी।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

अवधी में तुलसी ने पंजाबी हिन्दी (जेहिं, तेहिं) तथा पंजाबी प्रयोग भी किए हैं। साथ ही लोकाक्ति तथा मुहावरों का प्रयोग किया है।

वहीं जायसी ने ठेठ अवधी का प्रयोग किया है, जिसमें लोक शब्दों 'दवंगरा" का प्रयोग, नैन चुवहिं जस महवट नीर' इत्यादि का प्रयोग उल्लेखनीय है।

अतः अवधी का प्रयोग साहित्य के मध्यकाल चरण में प्रबन्धात्मकता को ~~सिद्ध करने~~ के दिखाने के लिए हुआ है।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) अवधी और भोजपुरी के अंतर पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation